ऑडियो नंबर–205 कम्पिला ओम् शान्ति मु.7.6.86 प्रातःक्लास

महालक्ष्मी या विष्णु को एक सिर दिखाते हैं, भुजाएँ चार दिखाते हैं; और रावण को? रावण को दस सिर दिखाते हैं और भुजाएँ दुगुनी दिखा देते हैं यानी रावण के सहयोगी बहुत बन जाते हैं; लेकिन मतें देने वाले भी अनेक हैं, एक सिर नहीं है। मत किससे दी जाती है? मुख से दी जाती है ना! बुद्धि में ही मत समाई हुई है ना! तो रावण को दस मत माने अनेक मत रावण को दिखाई जातीं और विष्णु का या महालक्ष्मी का रूप जो है, वो अनेक मतें चलाने वाला नहीं है, एक मत पर चलता है और सहयोग अपनी भुजाओं से देता है। तो विष्णु है सहयोगी कार्य में यानी विष्णु के रूप में जो पार्ट बजाने वाली आत्माएँ हैं, वो शिवबाबा के कार्य में सहयोगी तो बनती हैं; लेकिन अपनी अक्ल नहीं चलातीं; और रावण? रावण सम्प्रदाय के क्या करते हैं? वो सहयोगी भी ज़्यादा बनते हैं और अक्ल भी बहुत ज़्यादा चलाते हैं। तो कहाँ परमात्मा की मत और कहाँ मनुष्य की अपनी मत, अंतर तो बहुत पड़ जाएगा। अरे! जब समझते हो कि परमात्मा बाप आया हुआ है ऊँचे–ते–ऊँचा, तो उसी की मत मानो ना! फिर अपनी–2 क्यों चलाते हो? अपनी मत से फिर बँटाधार हो जाता।

तो महालक्ष्मी का पति भी होगा। दो भुजाएँ ज़रूर नारायण की होंगी। यह नहीं समझते कि वह ल.ना. दोनों इस समय ज्ञान–ज्ञानेश्वरी हैं। किस समय? संगमयुग। अभी संगमयुग चल रहा है या सतयुग चल रहा है? संगमयुग चल रहा है। ज्ञानियों का कंट्रोलर और ज्ञानियों की कंट्रोल करने वाली। तो जो ईश्वरी होगी उसको कोई शासित कर सकेगा ज्ञान में? उसकी वाचा को ज्ञान के आधार पर कोई बंद कर सकेगा? नहीं। तो अभी संगमयुग में तुम बच्चे हो ज्ञान–ज्ञानेश्वरी। ज्ञानियों के ईश्वर और ज्ञानियों की ईश्वरी। तो अभी संगमयुग नहीं चल रहा है क्या? चल रहा है। तो ज्ञान–ज्ञानेश्वरी भी होने चाहिए या नहीं? ज़रूर कोई आत्माएँ ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनिया में हैं, जिनका मुकाबला ज्ञान के आधार पर कोई सामने आकर नहीं कर सकता। जैसे मम्मा–बाबा का मुकाबला कोई ब्राह्मणों की दुनिया में नहीं कर सकता था वैसे अभी भी ज्ञान–ज्ञानेश्वरी का ही पार्ट चल रहा है यज्ञ के अंदर। राज–राजेश्वरी का पार्ट अभी नहीं चल रहा है। ब्राह्मण जो हैं, वो राजा–रानी अभी नहीं हैं। अपने को क्या समझें? हम सेवाधारी हैं। ज्ञान की सेवा भले करें, कर्मणा सेवा भले करें; लेकिन हम किसी के ऊपर कंट्रोल करने वाले नहीं हैं। कोई मानता है बात, तो ठीक; नहीं मानता है, तो भी हमें सेवा करनी। तो इस समय तुम बच्चे ज्ञान–ज्ञानेश्वरी बनते हो। लक्ष्मी से सिर्फ़ पैसे माँगते हैं। जगदम्बा को कहते हैं– सर्व आशाएँ पूर्ण करने वाली हैं और लक्ष्मी से सिर्फ़ क्या कहते हैं? पैसे माँगेंगे सिर्फ़ लक्ष्मी से। यादगार कहाँ की हुई? इसका मतलब है कि महालक्ष्मी का जो रूप बनता है, उस महालक्ष्मी के रूप में, जो कलश को धारण करने वाली है– ज्ञानेश्वरी, वो कोई अलग है। वो ज्ञान के कलश को धारण करती है, वज़न ढोती है ज्ञान के कलश का, बाँटने का काम पूरा नहीं होता उसके द्वारा। बाँटने के काम के लिए कौन आती है? लक्ष्मी आती है। तो दाईं भुजा दिखाते हैं वो लक्ष्मी की। लक्ष्मी जो है वो बाँटती है; लेकिन ज्ञान में पूरी होशियार, पूरा ज्ञान उसकी बुद्धि में कोई नहीं है। तो लक्ष्मी भी किसकी बच्ची हो जाती है? जगदम्बा की बच्ची हो जाती है। तो बताया कि लक्ष्मी से सिर्फ़ पैसे माँगते हैं। कौन–से पैसे? ज्ञान–धन माँगते हैं। आदि देवी, जो

सभी मनोकामनाएँ पूर्ण करती हैं, उसके पास सब आशाएँ लेकर जाते हैं और लक्ष्मी के पास सिर्फ़ धन की आशा ले करके जाते हैं। तो सभी आशाएँ तुम बच्चों की इस समय पूरी करते हैं। कौन? अरे! जगदम्बा। जगदम्बा के द्वारा बाप इस समय तुम्हारी सब आशाएँ पूरी करते हैं। कौन–सी आशाएँ– दुष्ट आशाएँ या अच्छी आशाएँ? जो शुभ आशाएँ हैं, वो तुम्हारी सब इस समय पूरी होती हैं जगदम्बा के थ्रू। ये किसी को पता नहीं है। क्या? कि अभी संगमयुग चल रहा है और इस समय जगदम्बा के द्वारा, निमित्त बनती है जगदम्बा, जगदम्बा के द्वारा सर्व आशाएँ पूरी होती हैं। तो जब सब आशाएँ जगदम्बा के द्वारा पूरी होंगी, तो वो मीडिया होना चाहिए या नहीं होना चाहिए? ज़रूर होना चाहिए। यह किसको पता नहीं है कि अम्बा सर्व मनोकामनाएँ पूर्ण करने वाली हैं।

तुम जानते हो आधा कल्प के लिए हमारे सब रोग दूर हो जाते हैं। यहाँ तुमको मुट्ठा मिल जाता है माना होलसेल मिल जाता है। भक्तिमार्ग में रेजगारी मिलती है। माँगते हैं सब देवियों से। भक्तिमार्ग में क्या करते हैं? कोई किसी देवी को पकड़ता है, कोई किसी देवी को पकड़ता है; और ज्ञानमार्ग में? ज्ञानमार्ग में तो हमें पता चल जाता है– जगतपिता कौन है और जगदम्बा कौन है। बाकी जो देवियाँ हैं, वो तो जगदम्बा की भुजाएँ हैं ना! तो भुजाएँ भुजाएँ हैं और अम्बा अम्बा है। अम्बा के कंट्रोल में ही भुजाओं को चलना पड़े। तो भक्तिमार्ग में सब देवियों से माँगते हैं। माँगना किससे चाहिए? एक से माँगना चाहिए। सेना तो जगदम्बा की है। कौन? जो भी भुजाएँ मददगार बनती हैं, वो किसकी सेना है? जगदम्बा की सेना है। कोई से क्या माँगते हैं, कोई से क्या माँगते हैं। रिद्धि–सिद्धि भी सीखते हैं। तो सब है भक्तिमार्ग। यह भी ड्रामा में नूँध है। हनुमान की पूजा करने वाले भावना से करते हैं तो उनकी वह मनोकामनाएँ पूरी कर देते हैं। वो तो समझते हैं कि सबमें परमात्मा है, सर्वव्यापी है। तो जो जिसकी पूजा करते हैं, उससे उनको साक्षात्कार हो जाता है। फायदा कुछ भी नहीं है। भक्तिमार्ग में उतरते–2 पतित बन गए हैं। अनेक प्रकार की पूजाएँ करते, फिर भी नीचे गिरते आए हैं। पावन कोई नहीं बनता। मनुष्य सृष्टि को पतित ही बनाते हैं। मनुष्य–सृष्टि नीचे गिरनी ही है। 5 तत्व कभी पतित बनते हैं तब तो जैसा सोना होता है वैसा जेवर बनता है। अगर 5 तत्व पतित न बनें, तो शरीर भी पतित नहीं बन सकता। यह ड्रामा को समझने की बड़ी अच्छी बुद्धि चाहिए। सृष्टि का चक्र कैसे चलता है, भारत क्या था, इन ल.ना. का राज्य था, फिर अब भारत इतना कंगाल क्यों बना है! कारण क्या है? भारत कंगाल क्यों बना? बाप को भूल गए, बाप की रचना को भूल गए, बाप की प्रवृत्ति को भूल गए, मात–पिता को भूल गए। तो यह सब बातें बाप आ करके समझाते हैं। अच्छा, मीठे–2 सिकीलधे बच्चों प्रति मात–पिता, बापदादा का यादप्यार, गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते। ओम् शांति।

09.06.86 का प्रातः क्लास। रिकॉर्ड चला है– छोड़ भी दे आकाश सिंहासन इस धरती पर आ जा रे! माना? अब ऊँची स्टेज को छोड़ दे और नीची स्टेज में आ जा। क्यों? उसकी ऊँची स्टेज में रहने से तुम्हारा काम नहीं चलता क्या? ऊपर वाले को भी नीचे बुला लेना है! मीठे–2 सिकीलधे बच्चों ने गीत सुना। इस गीत से सर्वव्यापी का ज्ञान तो उड़ जाता है। क्यों? क्यों उड़ जाता है? क्योंकि ऊपर से नीचे आएगा तो सर्वव्यापी कहाँ हुआ! अगर होता तो बुलाते

क्यों? अब भारत बहुत दुःखी है। याद करते हैं। ड्रामानुसार यह सब गीत बने हुए हैं। दुनिया वाले नहीं जानते हैं। बाप आते हैं पतितों को पावन करने के लिए। आकाश सिंहासन छोड़के क्यों आते हैं? क्योंकि ऊँची स्टेज में रह करके, ऊपर रह करके पतितों को पावन नहीं बनाया जा सकता। कोई डूबा हुआ होता है तो उसको निकालने वाले को भी क्या करना पड़ता है? डुब्बक लगानी पड़ती है। तो दुखियों को दुःख से लिब्रेट करने, सुख देने के लिए आते हैं। बच्चे अब जान गए हैं। वही बाप आया हुआ है। बच्चों को पहचान मिल गई है कि वही बाप आया हुआ है। स्वयं बैठ बतलाते हैं। मैं साधारण तन में प्रवेश कर सारी सृष्टि के आदि–मध्य–अंत का राज़ सुनाता हूँ। सृष्टि तो एक ही है। सिर्फ़ नई और पुरानी होती है। जैसे शरीर बचपन में नया होता है, फिर पुराना होता है। नया शरीर, पुराना शरीर, दो नहीं कहेंगे। है एक ही, सिर्फ़ नए से पुराना बनता है। वैसे दुनिया भी एक ही है। नई से अब पुरानी हुई है। नई कब बनी, यह फिर कोई भी बतलाय नहीं सकता। बाप आ करके समझाते हैं– बच्चे, जब नई दुनिया थी तो नया भारत था, सतयुग कहा जाता था। वही भारत अब पुराना बना है। इसको पुराना/ओल्ड वर्ल्ड कहा जाता है। न्यू वर्ल्ड ही फिर ओल्ड बनी है। फिर उनको नया ज़रूर बनना है। नई दुनिया का बच्चों ने साक्षात्कार भी किया है। अच्छा, उस नई दुनिया के मालिक कौन थे? बरोबर यह ल.ना.। आदि सनातन देवी–देवताएँ उस दुनिया के मालिक थे। यह अब बाप बच्चों को समझाय रहे हैं। बाप कहते हैं अब निरंतर यही याद करो। क्या याद करो? बाप क्या समझाय रहे हैं? कि नई दुनिया के मालिक यह ल.ना. थे, ये समझाय रहे हैं। तो समझ में आ गया? क्या? कि नई दुनिया के मालिक यह ल.ना.। वह नहीं, यह। यह ल.ना. थे। यह माना? (किसी ने कुछ कहा–...) चित्र की तरफ इशारा किया, वो समझा तुमने! चित्र को समझा, चरित्रधारी को नहीं समझा? (किसी ने कहा–धारी को भी समझा) बाप परमधाम से हमको पढ़ाने, राजयोग सिखाने आया हुआ है। सारी महिमा उस एक की है। ब्रह्मा के तन में बैठके बोलते हैं कि सारी महिमा उस एक की है। ऐसे क्यों? भविष्य की तरफ इशारा किया। इस स्वरूप की महिमा नहीं है, जिसमें बैठ करके उस समय वाणी चलाई। सारी महिमा उस एक की है जो पार्ट, परमात्म–पार्ट भविष्य में प्रत्यक्ष होने वाला है। इनकी महिमा कुछ भी नहीं है। इनकी माना? ब्रह्मा की। दुनिया में ब्रह्मा के चित्र नहीं पूजे जाते हैं। ब्रह्मा की मूर्ति नहीं बनाई जाती, मंदिर नहीं बनाए जाते, पूजा नहीं होती। इस समय तो सब तुच्छ बुद्धि हैं। कुछ समझते ही नहीं हैं। इसलिए मैं आता हूँ। क्या समझाने के लिए आता हूँ मैं? समझाने के लिए आता हूँ, तो क्या समझाने के लिए आता हूँ? तुच्छ बुद्धियों की समझ में तो आता नहीं कि नई दुनिया के मालिक कौन हैं, तब तो गीत बनाया है। कौन–सा गीत? छोड़ भी दे आकाश सिंहासन। सर्वव्यापी का ज्ञान तो उड़ जाता है। हरेक का पार्ट तो अपना–2 है।

बाप बार–2 कहते हैं देह–अभिमान छोड़, आत्मा–अभिमानी बनो और ऑरगन्स द्वारा शिक्षा धारण करो। क्या? कौन–सी शिक्षा है? इस राजयोग की शिक्षा क्या है? क्या शिक्षा है राजयोग की? (किसी ने कुछ कहा–...) हाँ, नर से नारायण वो तो लक्ष्य है; लेकिन शिक्षा क्या है? अपने घर–गृहस्थ में रहते कमल–फूल समान पवित्र बनो– ये शिक्षा बच्चों को दे रहे हैं। तो इसलिए मैं आता हूँ। ये शिक्षा ऑरगन्स द्वारा धारण करनी है। एक ऑरगन द्वारा धारण करनी है या सभी ऑरगन्स द्वारा? कोई ऑरगन ऐसा बचे नहीं जो कमल–फूल समान बनने की शिक्षा धारण न कर पाए। कमल क्या करता है? कीचड़ में रहता है और कीचड़ में रहते हुए भी उपराम। एक बूँद भी कीचड़ की नहीं रह सकती, चिपक नहीं सकती। भल इस बाबा को चलते–फिरते देखते हो; परंतु याद शिवबाबा को करो। इस बाबा में और शिवबाबा में क्या अंतर हुआ? अरे इस बाबा के अंदर शिवबाबा नहीं है क्या? माना ब्रह्मा दादा लेखराज के अंदर में शिवबाबा नहीं है? है तो; लेकिन वो रूप नहीं है बाबा का, जो अविनाशी रूप है, जिसको कहा

जाता है– कालों को काल– महाकाल, जिसको कोई काल खा नहीं सकता; क्योंकि अकालमूर्त को याद करेंगे तो हम भी मास्टर अकालमूर्त बनेंगे और जिसको काल खा जाए उसको याद करेंगे तो हम भी, हमको भी काल खा जाएगा। ऐसे ही समझो, शिवबाबा ही सब–कुछ करते हैं। शिवबाबा की ही याद रहेगी, ब्रह्मा है नहीं। भल इनका रूप हमको आँखों से दिखाई पड़ता है। तुम्हारी बुद्धि शिवबाबा की तरफ जानी है। शिवबाबा न हो तो इनकी आत्मा, इनका शरीर कोई काम का नहीं। हमेशा समझो, इसमें शिवबाबा है। वह इस द्वारा पढ़ाते हैं, ये नहीं पढ़ाते। तुम्हारा यह टीचर नहीं है। कौन? ब्रह्मा टीचर नहीं है। सुप्रीम टीचर वह है। याद उनको करना है। कब भी जिस्म को याद नहीं करना है। बुद्धियोग बाप के साथ लगाना है।

बच्चे याद करते हैं– फिर से आ करके ज्ञान–योग सिखाओ। क्या याद करते हैं? फिर से आ करके ज्ञान–योग सिखाओ। फिर से माना? परमपिता परमात्मा के सिवाए कोई राजयोग सिखलाय नहीं सकता। फिर से का मतलब क्या हुआ? दुबारा आओ। क्योंकि राजयोग का ज्ञान प्रवृत्ति में रह करके दिया है। ब्रह्मा–सरस्वती की प्रवृत्ति नहीं कहेंगे, वो तो उनकी बेटी थी। तो बोला– फिर से आ करके राजयोग सिखाओ। अब बच्चों की बुद्धि में है। वही बैठ गीता का ज्ञान सुनाते हैं। फिर यह नॉलेज प्रायः लोप हो जाती है। वहाँ दरकार ही नहीं। राजधानी स्थापन हो गई, सद्गति हो जाती है। ज्ञान दिया जाता है दुर्गति से सद्गति में आने के लिए। ज्ञान लेने का मतलब क्या है? कि ज्ञान लेने वाला दुर्गति में है, बुद्धि की गति दुष्ट गति की ओर जा रही है। तो मन–बुद्धि का रुझान जब दुष्ट गति की ओर है, गिरती कला की ओर है, देह और देह के सम्बंधियों की तरफ बुद्धि खिंचती है, तो इससे साबित होता है कि दुर्गति है। तो सद्गति के लिए ये ज्ञान दिया जाता है, सच्ची गति हो। मन–बुद्धि की पहले सच्ची गति होगी, फिर शरीर की होगी। पहले सच्ची गति क्या होगी मन–बुद्धि की? कि देह और देह के सम्बंधों से बुद्धि निकल कर मनन–चिंतन–मंथन में लगेगी, आत्म–चिंतन में लगेगी, परमात्म–चिंतन में लगेगी और इस सृष्टि के आदि–मध्य–अंत के राज़ को जानने में लगेगी। बाकी देह और देह के सम्बंधों की दुनिया भूलने लग पड़े। बाकी तो सब हैं भक्तिमार्ग की बातें। मनुष्य जप–तप–दान–पुण्य आदि जो कुछ करते हैं, सब भक्तिमार्ग की बातें हैं। क्या? कोई नाम का जाप करते हैं, शरीर को कष्ट देकर तपस्या तपते हैं, हाथ–पाँव बाँध करके बैठ जाते हैं। वो क्या हुआ? शरीर को तपाना हुआ। खींच करके बिंदु की याद करते हैं। वो भी तपना हुआ। दान करते हैं, पुण्य करते हैं। ये सब भक्तिमार्ग है। इनसे मुझे कोई भी मिल नहीं सकता; क्योंकि दान करते हैं, वो भी किसको करते हैं? पतितों को दान करते हैं। पतितों को दान करने से रिज़ल्ट क्या निकलेगा? (किसी ने कहा– पतित बनते रहेंगे) पतित ही बनेंगे। मेरे से कोई नहीं मिल सकता। आत्मा के पंख टूट गए हैं। पंख कौन–से? ज्ञान–योग के पंख टूट चुके हैं। इसलिए कहते हैं– फिर से आओ। पत्थर बन गए हैं। माना? पत्थर बुद्धि बन गए। पत्थर से फिर पारस बनाने मुझे आना पड़े। पारस कैसा होता है? पारस भी तो पत्थर होता है। पत्थर से पारस। पारस के लिए कहते हैं कि उसके छूने से लोहा भी सोना बन जाता है। अब कोई ऐसा पारस पत्थर तो होता नहीं है। वास्तविकता क्या है? पत्थर बुद्धि की बात है। ऐसे–2 पत्थर बुद्धि, जो परमात्म–ज्ञान लेने से इतने तीखे बन जाते हैं कि उनके संसर्ग–सम्पर्क में आने वाली आत्माएँ भी उनके जैसी बन जाती हैं– पारसबुद्धि, मनन–चिंतन–मंथन करने वाली बन जाती हैं। तो पत्थर से पारस बनाने के लिए मुझे आना पड़े।

बाप कहते हैं अब कितने मनुष्य हैं। सरसों मिसल संसार भरा हुआ है। अब सब खत्म हो जाने हैं। सतयुग में तो इतने मनुष्य होते नहीं हैं। नई दुनिया में वैभव बहुत और मनुष्य थोड़े होंगे। यहाँ तो इतने मनुष्य हैं जो खाने के लिए नहीं मिलता। पुरानी रेतीली ज़मीन है। फिर नई हो जाएगी। वहाँ है ही एवरीथिंग न्यू। रेतीली ज़मीन की क्या बात होती है खास? (किसी ने कुछ कहा–...) हाँ, उसमें पैदाइश कुछ नहीं होती; क्योंकि इतना पानी नहीं मिल सकता। उसके लिए

पानी बहुत ढेर सारा चाहिए। तो वहाँ एवरीथिंग न्यू होगा। नाम ही कितना मीठा– हैविन, बहिश्त, देवताओं की नई दुनिया।

पुराने घर को तोड़ नए में बैठने की दिल होती है ना! अब है नई दुनिया, स्वर्ग में जाने की बात। इसमें तो पुराने शरीर होते हैं। इस पुराने शरीर को हार पहनाएँगे तो तुम्हारा बुद्धियोग इसमें चला जाएगा। क्या बोला? इस पुराने शरीर को कोई भी (किसी ने बीच में कहा–हार नहीं) हार का मतलब, सिर्फ़ हार की बात नहीं, कोई भी श्रृंगार की चीज़, गहना वगैरह पहनेंगे तो बुद्धियोग कहाँ जाएगा? देह में अथवा जिस देहधारी ने दी उसके तरफ चला जाएगा। शिवबाबा कहते हैं हमको हार की दरकार नहीं। हाँ, हमको हार की दरकार नहीं, तुम ही पूज्य बनते हो। पुजारी भी तुम्हीं बनते हो। आपे ही पूज्य, आपे ही पुजारी बनते हो। तो अपने ही चित्र की पूजा करने लग पड़ते। बाबा कहते हैं मैं न पूज्य बनता हूँ, न फूल आदि की मेरे को दरकार है। फूल की भी दरकार किसको? तुम्हारे ऊपर ही फूल चढ़ाए जाते हैं। मैं क्यों यह पहनूँ! क्या? क्या पहनूँ? किसकी बात हो रही थी? हार। मैं गले का हार क्यों पहनूँ? यानी फूलों का हार मैं क्यों पहनूँ? इसलिए कब फूल–माला आदि लेते नहीं हैं। तुम पूज्य बनते हो, फिर जितना चाहिए उतना फूल पहनो। और पूज्य कहाँ बनते हो– सतयुग में या कलियुग में? (किसी ने कहा–संगमयुग में) संगम पर पूज्य बनते हो। तो जब तुम पूज्य बनो तो हार पहन लें। मैं तो तुम बच्चों का मोस्ट बिलवेड ओबीडियेंट फादर हूँ, टीचर भी हूँ, सर्वेंट भी हूँ। बड़े–2 रॉयल आदमी जब नीचे सही डालते हैं, साइन करते हैं, तो लिखते हैं– मैंटो, कर्जेंट आदि। अपने को लॉर्ड कभी नहीं लिखेंगे। यहाँ तो लिखते हैं– श्री–2 फलाना। एकदम 'श्री' अक्षर डाल देते हैं।

तो बाप बैठ समझाते हैं अब इस शरीर को याद नहीं करो। अपने को आत्मा निश्चय करो और बाप को याद करो। इस पुरानी दुनिया में आत्मा और शरीर, दोनों ही पतित हैं। सोना 9 कैरेट होगा तो जेवर भी 9 कैरेट। सोने में ही खाद पड़ती है। यहाँ खाद काहे में पड़ती है? आत्मा में ही विकारों की खाद पड़ती है। तो आत्मा को कब निर्लेप नहीं समझना चाहिए। यह ज्ञान अभी तुमको है। क्या? कि आत्मा निर्लेप नहीं होती, सिर्फ़ परमात्मा ही लेप–छेप से रहित होता है। उसको संग का रंग नहीं लगता। आधा कल्प 21 जन्म के लिए प्रारब्ध तुम पाते हो। तो कितना पुरुषार्थ करना चाहिए; परंतु बच्चे घड़ी–2 भूल जाते हैं।

शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा हमको शिक्षा दे रहे हैं। ब्रह्मा की आत्मा भी उनको याद करती है। ब्र.वि.शं. हैं सूक्ष्मवतनवासी। बाप कहते हैं पहले सूक्ष्म सृष्टि रचता हूँ। क्या कहा? देवताओं की सृष्टि बाद में और जो पक्के ब्राह्मण हैं जनेऊधारी, उनको क्या कहते हैं? पक्का ब्राह्मण। जिन्होंने तीन सूत्रों को धारण कर लिया। माना? तीन सूत्र, ये ज्ञान जिनकी बुद्धि में बैठ जाता है कि वो तीन सूत्र कौन–2 से हैं, ब्रह्मा, विष्णु और शंकर का प्रैक्टिकल रूप मूर्ति कौन–सी है। जिनकी बुद्धि में ये बैठ जाता है, वो हैं पक्के ब्राह्मण। तो पहले किसकी रचना रचता हूँ। (किसी ने कुछ कहा–...) नहीं, पहले ब्र.वि.शं. की सूक्ष्म रचना रचता हूँ तुम्हारे बुद्धियोग में। प्रैक्टिकल में नहीं देखने में आएँगे; लेकिन बुद्धियोग से तुम उनको देख सकते हो; क्योंकि सूक्ष्म आकारी स्वरूप है। कोई साकारी स्वरूप ऐसा नहीं है जिनको इन आँखों से देखा जा सके। ज्ञान की दृष्टि से देख सकते हो।

निर्वाणधाम ऊँच–ते–ऊँच धाम है। आत्माओं का निर्वाणधाम सबसे ऊँच है। एक भगवान को सभी भक्त याद करते हैं; परंतु तमोप्रधान बन गए हैं। तो बाप को भूल ठिक्कर, भित्तर, सबकी पूजा करते रहते हैं। बुद्धि जब तामसी बनती है, व्यभिचारी बनती है। व्यभिचारी पूजा कब से शुरू होती? द्वापर आने को होता, तो द्वापर के अंत में, तामसी स्टेज में, द्वापर से नहीं एकदम व्यभिचारी पूजा शुरू होती। द्वापर में पहले.....। ठिक्कर बुद्धियों में ठोंक देते। ठिक्कर बुद्धि किसे कहा जाता? सब संगमयुग की बातें हैं। ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनिया में ठिक्कर बुद्धि

कौन–से हुए? मिट्टी का ढेला, थोड़ी–सी माया की ठोकर लगी और मिट्टी का ढेला टूट गया, अनिश्चय बुद्धि बन गया। तो समझते हैं कि ऐसों में भी भगवान आ जाता है। जिनको घड़ी–2 अनिश्चय पैदा होता है परमात्म–पार्ट पर, ऐसों में कोई परमात्मा आ सकता है क्या? परमात्मा तो अटल–अखण्ड–अडोल सितारे में प्रवेश करेगा या घड़ी–2 अनिश्चय वालों में प्रवेश करेगा? एक ही सितारा है जो कभी अपना स्थान नहीं छोड़ता, अटल रहता है। तो परमात्मा कोई ठिक्कर बुद्धि में नहीं आते हैं, भित्तर बुद्धि में भी नहीं आते। भीत माना? दिवाल। जो दिवाल की तरह ज्ञान मार्ग में रोड़े बन करके अटक जाएँ– न खुद ज्ञान में आगे बढ़ें, न दूसरों को ज्ञान में, ज्ञान के विस्तार में जाने दें। ऐसे भित्तर बुद्धियों में परमात्मा प्रवेश नहीं करता। तो सबकी पूजा करते रहते।

अपन जानते हैं जो कुछ चलता है, वो ड्रामा शूट होता जाता है। ड्रामा में एक बार जो शूटिंग होती है; समझो बीच में कोई पंछी आदि उड़ता है, तो वही घड़ी–2 होती रहेगी। पतंगा उड़ता हुआ शूट हो गया तो फिर रिपीट होता रहेगा। तो जिसका जो भी ड्रामा में पार्ट है, भित्तर बुद्धि बनने का या पत्थर बुद्धि बनने का, वो पार्ट उसका कल्प–2 का नूँधा हुआ है। तो यह भी ड्रामा का सेकेंड–2 रिपीट होता जाता है, पार्ट शूट होता रहता है। यह बना–बनाया ड्रामा है। तुम एक्टर्स हो। सारे ड्रामा को साक्षी हो करके देखते हो। एक–2 सेकेंड ड्रामा अनुसार पास होता जाता है। पत्ता हिला, ड्रामा पास हुआ। ऐसे नहीं, पत्ता–2 भगवान के हुकुम पर हिलता है। भगवान का काम पत्तों को हिलाना है क्या? नहीं। यह सब ड्रामा की नूँध है। इनको अच्छी रीति समझना पड़ता है।

बाप ही आ करके राजयोग सिखलाते हैं और ड्रामा की नॉलेज देते हैं। चित्र भी कितने अच्छे बने हुए हैं। तब संगमयुग पर घड़ी का काँटा भी लगा हुआ है। कलियुग अंत और सतयुग आदि का संगम है। अभी पुरानी दुनिया में अनेक धर्म हैं। नई दुनिया में फिर यह नहीं रहेंगे। तुम बच्चे हमेशा ऐसा ही समझो कि हमको बाप पढ़ाते हैं। हम गॉडली स्टूडेंट हैं। कैसे पढ़ाते हैं बाप? सर्वव्यापी होकर पढ़ाते हैं या एकव्यापी होकर पढ़ाते हैं? (किसी ने कुछ कहा–...) इसका उल्टा अर्थ नहीं समझा जाए कि हमको बाप ही पढ़ाते हैं। कि जो भी संदली पर बैठा, क्या समझो? कि हमको बाप ही पढ़ाते हैं। तो क्या बाप सर्वव्यापी हो गया? सर्वव्यापी की बात नहीं। मुकर्रर रथ में भी यह नहीं समझना है कि हमको ये देहधारी पढ़ाता है। इस देहधारी की आत्मा याद न आए। पढ़ाने वाला कौन है? सुप्रीम सोल। तो हम गॉडली स्टूडेंट हैं। भगवानुवाच मैं तुमको राजाओं का राजा बनाता हूँ। राजे लोग भी इन ल.ना. को पूजते हैं। कहाँ पूजेंगे? (किसी ने कुछ कहा–...) सतयुग में पूजेंगे? सतयुग में तो कोई राजाएँ होते ही नहीं और, एक ही राजा होता है। तो बात कहाँ की है? अरे! संगमयुग में जो राजा बनने वाली आत्माएँ हैं नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार, वो सब किसको पूजेंगे? एक ल.ना. को। तुम बच्चे समझ गए हो हम सो पूज्य थे, फिर हम सो पुजारी बने। बाबा तो नहीं बनते हैं। बाबा कहते हैं– न मैं पूज्य बनता हूँ और न मैं पुजारी बनता हूँ। इसलिए न मैं फूल पहनता हूँ और न मेरे को फूल पहनाने पड़ते हैं। क्या! न मैं फूल पहनता हूँ और न फिर फूल पहनाता हूँ। पहनता भी मैं नहीं हूँ और पहनाता भी मैं नहीं हूँ। तुम पहनते भी हो और वो दूसरों के गले में (फूलों का) हार बना करके डालने भी पड़ते हैं। कब की बात है? ये बात कब की है– फूल पहनना और फूल पहनाना? (किसी ने कुछ कहा–...) संगम! हाँ, संगम में तो सब–कुछ शूट होता ही है; लेकिन द्वापर–कलियुग में भी ये ड्रामा चलता है। तो हम फूल क्यों स्वीकार करूँ? फूल कौन स्वीकार करे? बच्चे ही फूल स्वीकार करेंगे। लेकिन कब? जब बच्चे पूज्य बनें। अभी तुम स्वीकार नहीं कर सकते। कायदे अनुसार उन्हों को हक है जिनकी आत्मा और शरीर प्योर हैं। वही हकदार हैं फूलों के। वहाँ स्वर्ग में तो हैं ही खुशबूदार। फूल खुशबू के लिए होते हैं और गले में हार बनाकर पहनने के लिए भी होते हैं।

क्या? फूल। काँटे नहीं, फूल। बाप कहते हैं अभी तुम बच्चे विष्णु के गले का हार बनते हो।... बनते हो? कि रुद्र के गले का हार बनते हो? पहले रुद्र के गले का हार बनते हो, फिर? फिर विष्णु के गले का हार बनते हो और रुद्र किसको कहा जाता है? शिव को कहा जाता है और अभी शिवबाबा ने क्या कहा? मैं तो हार पहनता ही नहीं। तो तुम रुद्र के गले का हार कैसे बनोगे? (किसी ने कहा– जब वो साकार में आता है।) हाँ, रुद्र का मतलब ही है कि वो जिस साकार में प्रवेश करता है, उसके गले के हार तुम बनते हो।

नम्बरवार तुमको तख्त पर बैठना है। जिन्होंने जितना कल्प पहले पुरुषार्थ किया है, करते हैं और करने लग पड़ेंगे। नम्बरवार तो हैं। बुद्धि कहती है फलाना बच्चा बहुत अच्छा सर्विसेबुल है। जैसे दुकान में होता है, सेठ बनते हैं, भागीदार बनते हैं, मैसेंजर बनते हैं। नीचे वालों को भी लिफ्ट मिलती है। तो यह भी ऐसे हैं। तुम बच्चों को भी मात–पिता पर जीत पानी है। क्या? (किसी ने कुछ कहा–...) जहाँ जीत वहाँ जन्म मिलता है– ये नियम है। बच्चा अगर माँ–बाप के घर में जन्म लेता है, टट्टी–पेशाब साफ कराता है, तो ज़रूर उसने पूर्वजन्म में उन माँ–बाप की आत्माओं के ऊपर, कर्मों में विजय पाई है; इसलिए वो आ करके बच्चा बनता है। जो कभी बाप बना ही नहीं है अब तक। ये कभी माँ–बाप नहीं बना है। तो तुम वंडर खाते हो। मात–पिता से आगे कैसे हम जा सकते हैं। क्या कहा? कैसे जा सकते हैं। कैसे जा सकते हो? मात–पिता पर भी कर्मों पर, कर्मों का जो हिसाब–किताब है, उसमें अगर मात–पिता पर भी तुमने विजय पहनी, तो क्या होगा? तुम मात–पिता के बच्चे जाकर बनेंगे। बाप तो बच्चों को मेहनत करके लायक बनाते हैं, तख्तनशीन बनाने के लिए। इसलिए कहते हैं अब हमारे दिल रूपी तख्त पर जीत पहनने से भविष्य के तख्तनशीन बनेंगे। पुरुषार्थ इतना करो जो नर से नारायण बनो। क्या कहा? नर से प्रिंस बनने का पुरुषार्थ नहीं बताया। वो तो अगले जन्म में बनेंगे। लेकिन गायन क्या है? नर से नारायण बनने का पुरुषार्थ करो। वो इसी जन्म में बनना है। एम–ऑब्जेक्ट मुख्य है ही एक। किंगडम स्थापन हो रही है, तो राजाई में वैराइटी पद हैं।

माया को जीतने का पूरा–2 पुरुषार्थ करो। बच्चों आदि को भी भल प्यार से चलाओ; परंतु ट्रस्टी हो करके रहो। भक्तिमार्ग में कहते थे ना– प्रभु! यह सब आपका दिया हुआ है। आपकी अमानत, आपने ले ली। अच्छा, तो फिर रोने की बात नहीं रही; परंतु यह तो है ही रोने की दुनिया। मनुष्य कथाएँ बहुत सुनाते हैं। वो तो सिर्फ़ कथाएँ सुनाते रहते हैं; लेकिन मोहजीत बनते नहीं हैं। एक राजा की कथा सुनाते हैं, मोहजीत राजा की। फिर कोई दुःख फील नहीं होता है; क्योंकि एक शरीर छोड़ दूसरा लिया। फील कब नहीं होता है? जब मोहजीत बनते हैं।

वहाँ कब कोई बीमारी आदि नहीं होती। एवर हेल्दी, निरोगी काया रहती है 21 जन्म के लिए। 21 जन्म के लिए निरोगी काया! गिनाओ, कौन–2 से 21 जन्म? त्रेता के 12, सतयुग के 8 और एक निरोगी जन्म संगमयुग का। तो अभी है? अभी थोड़े ही कहेंगे निरोगी जन्म। अभी तो रोगी जन्म है। तो ज़रूर संगमयुग में ही ऐसा पीरियड आना है कि नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार निरोगी भी बच्चे बनेंगे।

बच्चों को सब साक्षात्कार होता है। वहाँ रस्म–रिवाज़ कैसे चलती है। क्या ड्रेस पहनते हैं। स्वयंवर आदि कैसे होते हैं। सब बच्चों ने साक्षात्कार किया है। वह पार्ट सब बीत गया। बीत गया माना? जो बीत गया फिर रिपीट नहीं होगा क्या? होगा; लेकिन आदि में जो बीता है, वो बंद आँखों का साक्षात्कार था और अब किस रूप में रिपीट होगा? वो बुद्धियोग की आँखों से देखेंगे, देखते हैं। उस समय तो इतना ज्ञान नहीं था। किस समय? आदि में ज्ञान ही नहीं था और अभी तो इतना ज्ञान है। तो ज्ञान बुद्धि का विषय है और साक्षात्कार भावना की चीज़ है। भावना वाली आत्माओं को होता है साक्षात्कार और बुद्धिवादियों को होता है ज्ञान। अब

दिन–प्रतिदिन तुम बच्चों में ताकत बहुत आती जाती है, ज़ोर से। यह भी सब ड्रामा नूँधा हुआ है।

वंडर है ना, परमपिता परमात्मा का भी कितना भारी पार्ट है। खुद बैठ समझाते हैं। भक्तिमार्ग में भी ऊपर बैठ करके मैं कितना काम करता हूँ। परमधाम में काम करते हैं क्या? कौन काम करता है– बिंदु? बिंदु वहाँ परमधाम में बैठ करके काम करता है! क्या काम करता है? (किसी ने कुछ कहा–...) नीचे तो कल्प में मैं एक ही बार आता हूँ। बहुत निराकार के पुजारी भी होते हैं। परंतु निराकार परमात्मा कैसे आ करके पढ़ाता है, यह बात गुम कर दी। तो जो गुम कर दी, वो तुम उजागर करो। क्या गुम कर दी? (किसी ने कुछ कहा–...) निराकार परमात्मा कैसे पढ़ाता है। निराकार का मतलब? निराकारी स्टेज। भल शरीर तो है, उस शरीर की यादगार लिंग दिखाया जाता है; लेकिन उसको हाथ–पाँव नहीं दिखाए जाते, कर्मेंद्रियाँ नहीं दिखाई जातीं। क्यों नहीं दिखाई जातीं? क्योंकि ऐसी स्टेज दिखाई है चित्रकार ने कि उसको कर्मेंद्रियाँ होते हुए भी जैसे कि नहीं हैं। तो कर्मेंद्रियों का भान न होना, उसको लिंग रूप दिखाया है। है तो शरीरधारी और उसमें बिंदु सुप्रीम सोल प्रवेश होता है। तो गीता में भी कृष्ण का नाम डाल दिया है साकार का। तो निराकार से प्रीत ही टूट गई है। 'भी' शब्द यहाँ क्यों लगाया? भक्तिमार्ग वालों ने गीता में भी नाम डाल दिया और यहाँ ज्ञानमार्ग में भी, जो मुरली है हमारी– सच्ची गीता, उसमें क्या किया? पिताश्री का नाम डाल लिया। तो उससे रिज़ल्ट क्या हुआ? जब पिताश्री ही शिवबाबा हो गया, तो जो असली निराकारी स्टेज वाला भगवान है, उसके प्रति प्रीत टूट गई। यह तो परमात्मा ने ही आ करके सहज राजयोग सिखाया है और दुनिया को बदलाया है। दुनिया बदलती रहती है। युग फिरते रहते हैं। इस ड्रामा के चक्कर को अभी तुम समझ गए हो। मनुष्य कुछ नहीं जानते। कौन–से मनुष्य? जो सम्मुख नहीं हैं वो नहीं जानते और तुम सम्मुख हो तो समझ गए हो। सतयुग के देवी–देवताओं को भी नहीं जानते। सिर्फ़ देवताओं की निशानियाँ रह गई हैं।

तो बाप समझाते– हमेशा ऐसे समझो हम शिवबाबा के हैं। शिवबाबा हमको पढ़ाते हैं। शिवबाबा इस ब्रह्मा द्वारा हमको शिक्षा देते हैं। शिवबाबा की याद में फिर बहुत मज़ा आता रहेगा। ऐसा गॉडफादर कौन है? वह फादर भी है, टीचर भी है और सतगुरू भी है। कैसा गॉडफादर? जो एक ही शरीर से तीनों हो। दुनिया में ऐसे नहीं होता कि वही बाप भी हो, वही टीचर भी हो, वही गुरू भी हो। लेकिन यहाँ क्या विशेषता है? बाप के पार्ट की ये पहचान है कि उस बाप का कोई बाप नहीं, वो सबका बाप, बापों का भी बाप। धर्मपिताओं का भी वो पिता है। कयामत में भल धर्मपिताएँ प्रत्यक्ष होंगे; लेकिन वो धर्मपिताएँ उसका बाप नहीं बनेंगे। धर्मपिताओं को रियलाइज़ करना पड़ेगा कि ये हमारा भी बाप है। और वो टीचर भी है, सुप्रीम टीचर, जिसका कोई टीचर नहीं, कोई उसको टीच नहीं कर सकता, कोई उसको समझा नहीं सकता, वो सबको समझाता है। और, सतगुरू भी वही है। उसकी गति–सद्गति कोई नहीं कर सकता, वो सबकी सद्गति करने वाला है। तो ये भी बाप की पहचान है कि एक ही शरीर के द्वारा वो बाप भी है, टीचर और सतगुरू भी है। कई बाप बच्चों को पढ़ाते भी हैं तो वह ज़रूर कहेंगे– हमारा फादर टीचर है। परंतु वह फादर फिर गुरू भी हो, ऐसे नहीं होता है। टीचर हो सकता है। फादर को गुरू कब नहीं कहेंगे। इनका फादर भी टीचर था। किनका? ब्रह्मा का। पढ़ाते थे। हम भी पढ़ते थे। क्या बात? इनका माना किनका? ब्रह्मा का। फादर टीचर था, पढ़ाते थे। कौन पढ़ाते थे? ब्रह्मा का फादर जो टीचर था वो पढ़ाते थे और हम भी पढ़ते थे। ये 'हम' किसने कहा? मम्मा–बाबा ने कहा? हम माना एक होता है या दो? कम से कम दो होना चाहिए हम में। तो कौन दो हुए? ये कैसे, किसके लिए कहा? इंट्रड्यूस 'हम' शब्द किसके लिए किया? हम पढ़ते थे। हम दोनों। दोनों का मतलब राम–कृष्ण की आत्माएँ भी पढ़ती थीं। हम पढ़ते थे। वह है हद

का फादर और टीचर और यह हैं बेहद का फादर और टीचर। वो हद में भी बात लागू होती थी कि हम दोनों पढ़ते थे उस टीचर से। कौन–से टीचर से? हद के टीचर से। (किसी ने कुछ कहा–...) हाँ, हद के टीचर से पढ़ते थे और बाद में फिर क्या हुआ? फिर बेहद के टीचर से अब भी पढ़ रहे हैं। कौन–2 हैं? राम–कृष्ण की आत्माएँ एक ही शरीर में बैठ करके पढ़ाई पढ़ती हैं। तुम अपन को गॉडली स्टूडेंट समझो। तो भी अहो भाग्य! गॉडफादर तुमको पढ़ाते हैं। कितना क्लीयर है।

तो कितना मीठा बाबा है। मीठी चीज़ को याद किया जाता है। जैसे आशिक–माशूक का प्यार होता है। उनका विकार के लिए प्यार नहीं होता है। बस, एक/दो को देखते रहते हैं। तुम्हारा फिर प्यार है आत्माओं का, परमात्मा बाप के साथ। आत्मा कहती है– बाबा कितना ज्ञान का सागर है, प्रेम का सागर है। इस पतित दुनिया, पतित शरीर में आ करके हमको इतना ऊँच बनाते हैं। इसमें ज्ञान के सागर और प्यार के सागर की क्या बात हो गई? ज्ञानी किसको कहा जाए? ज्ञानी माना जानकार, जानने वाला। किसको जानने वाला? आत्मा और परमात्मा के स्वरूप को जानने वाला। जो आत्मा स्वरूप में, आत्मिक रूप में देखने वाला होगा, आत्म–ज्ञानी होगा, वो कभी देह को नहीं देखेगा। ऐसे नहीं कि काली कलूटी बैंगन लुटी देह है तो दूर–4 करता रहे, उसको पास भी/नज़दीक भी न आने दे। तो उसको ज्ञानी नहीं कहा जाएगा। तो वो ज्ञान का सागर है और फिर प्रेम का सागर है। कैसे पता चले? पतित दुनिया में आता है और पतित शरीर में आता है तब कहा जाएगा 'सागर' माना सबको अपने अंदर समाय लेगा। विकारी को भी अपने अंदर समा के रखता है।

इतना हमको ऊँच बनाते हैं। गायन भी है– मनुष्य से देवता किए करत न लागी वार। सेकेंड में वैकुण्ठ में ले जाते हैं। मनुष्य से देवता बनाने में देर नहीं लगती? एक सेकेंड में ही ले जाते हैं? तो ये 50/56 वर्ष किस खाते में गए? ये किस खाते में गए? ये निश्चय पैदा करने में जाते हैं। निश्चय नहीं होता कि परमात्मा बाप का परमात्म–पार्ट बजाने वाला असली स्वरूप कौन–सा है। बार–2 निश्चय–अनिश्चय– ये चक्र चलता रहता है। अगर एक बार पक्का निश्चय बैठ जाए, तो जैसे आत्मा एक सेकेंड में स्वर्ग में उड़ने लगेगी, सुख का अनुभव करने लगेगी, दुःख उसको अनुभव नहीं हो सकता। तुम सेकेंड में मनुष्य से देवता बन पड़ते हैं। यह है एम–ऑब्जेक्ट। उसके लिए पढ़ाई करनी चाहिए।

गुरूनानक ने भी कहा न– मूत पलीती कप्पड़ धोए। ये सिक्ख धर्म में ही इसका गायन क्यों है विशेष? (किसी ने कुछ कहा–...) गुरूनानक के कपड़े ज़्यादा धोए होंगे! सिक्ख धर्म का गायन इसलिए है कि अव्यक्त वाणी में बोला हुआ है– "कन्या–दान में सबसे आगे जाने वाली धरणी कौन–सी रही? पंजाब।" (अ.वा.19.12.78 पृ.137 मध्य) बेसिक नॉलेज में भी सबसे आगे जाती है और एडवांस नॉलेज में भी पंजाब की धरणी, पंजाब का खून कन्या–दान में सबसे आगे जाता है और सफलता भी किसको मिलती है? अधरकुमारों को पहले सफलता मिलती है कि अधरकुमारियों को मिलती है कि कुमारों को मिलती है कि कुमारियों को मिलती है? (किसी ने कहा–कुमारियों को) क्यों? (किसी ने कुछ कहा–...) क्यों सफलता मिलती? ये नहीं, मम्मा और बाबा का सवाल नहीं है, सफलता कुमारियों को क्यों मिलती है? क्योंकि पवित्रता होती है उनमें। पवित्रता से ही सब प्रकार की सफलता मिलती है। पवित्र जितना होगा उतना ज्ञानमार्ग में भी सफलता प्राप्त करेगा और जितना अपवित्र होगा उतना ज्ञान–योग की प्रारब्ध जल्दी प्राप्त नहीं कर सकेगा। तो नानक ने भी कहा। नानक को क्यों उठाया खास? सिक्ख धर्म में ये विशेष गायन है– मूत पलीती कप्पड़ धोती। कप्पड़ माना? शरीर रूपी वस्त्र। कैसा वस्त्र? मूत पलीती कपड़ धोए। धोए किसने? क्या गुरूनानक ने? वास्तव में गुरूनानक कोई भगवान नहीं है। गुरूनानक ने तो ये महिमा गाई है भगवान के लिए कि भगवान ने आ करके जो मूत पलीती

वस्त्र हैं, उसको साफ किया। लेकिन किसका? जो देवी–देवता सनातन धर्म का फाउंडेशन बनती है। सब धर्म हैं विदेशी, विपरीत धर्मों में से, विधर्मों में से; लेकिन एक ही धर्म ऐसा है जो देवी–देवता सनातन धर्म के पवित्रता में नज़दीक है। कैसे? (किसी ने कुछ कहा–...) सब धर्मों में व्यभिचार फैल जाता है। संन्यासी भी अंतिम जन्म में जा करके पूरे व्यभिचारी बन जाते, विदेशों में जा करके सब–कुछ ग्रहण करने वाले बन जाते। लेकिन सिक्ख धर्म एक ऐसा है जिसमें अंत तक ये बात अभी भी चली आ रही– एक नारी सदा ब्रह्मचारी।

तो ये लक्ष्य सोप है ना! कौन? ल.ना.। जिस तन में परमात्मा प्रवेश करता है, जो नर से नारायण बनता है, मुकर्रर रथ बनता है, वो कौन–सा सोप हुआ? (किसी ने कहा–वो है लक्ष्य सोप) लक्ष्य सोप हुआ, तो खूब घिसो। जल्दी से सफाई हो जाए। बाबा कहते हैं मैं कितना अच्छा धोबी हूँ। माना? मैं साबुन नहीं हूँ। मैं क्या हूँ? मैं धोबी हूँ। मैं तो साबुन को घिसने वाला हूँ। तो सोप कौन हुआ? जो शरीर धारण किया है वही क्या हुआ? लक्ष्य सोप। लक्ष्य सोप माना? नारायण। नर से क्या बनना है? नारायण। तो मैं कितना अच्छा धोबी हूँ। तुम्हारे वस्त्र– आत्मा और शरीर कितना शुद्ध बनाता हूँ। ऐसा धोबी कब देखा? कैसा धोबी? कोई धोबी ये कहे कि हम तुम्हारे कपड़े धो देंगे, अगले जन्म में आकर ले लेना। तो ऐसे धोबी को कपड़े डालने जाओगे? मोहन भाई कपड़े डालके आए ऐसे को? वो अगर कहता है– अगले जन्म में दे दूँऽऽ, मतलब देते ही नहीं। कब देके आए? मैंने कहा– अभी–2 ले जाना, इसी जन्म में। तो इसी जन्म में कपड़े बढ़िया करके अगर ऐसे धोए, तो सब कोई तैयार होगा कपड़े धुलाने के लिए। तो ये है, कंचन काया बनने वाला प्वॉइंट साबित होता है इसमें। कैसे? कि इसी जन्म में हमारे शरीर रूपी वस्त्र साफ करता है। आत्मा का ही मैल नहीं उतारता सिर्फ़; लेकिन शरीर रूपी वस्त्र का भी मैल उतार देता है। शरीर रूपी वस्त्र भी इसी जन्म में शुद्ध होना है। अगले जन्म में प्राप्ति होने की बात नहीं है। तो आत्मा जो बिल्कुल काली हो गई है उनको योगबल से इतना स्वच्छ बनाता हूँ। तो इनको कब भी याद न करना पड़े। किनको? जो विनाशी कपड़ा है उसको याद न करो। किसको याद करो? जो अविनाशी वस्त्र है, नर से नारायण बनता है, ऑलराउण्ड पार्ट बजाने वाला है, जिसका विनाश नहीं होने वाला है, उस स्वरूप को याद करो। यह सारा कार्य शिवबाबा का है। क्या कहा? तो फिर गलतफ़हमी हो जाए कि ये सोप का काम है या गधे का काम है। धोबी का गधा अलग होता है। धोबी अलग होता है और उसका साबुन अलग होता है। काम किसका होता है कपड़ा धोने का? धोबी का। तो उनको याद करो। इनसे मीठा वह है। किनसे मीठा? ब्रह्मा से भी जास्ती मीठा वो है।

आत्मा को कहते हैं तुमको इन आँखों से यह ब्रह्मा का रथ देखने में आता है। परंतु याद शिवबाबा को करो। इन आँखों से तो रथ ही दिखाई देगा। लेकिन याद किसको करो? शिवबाबा को याद करो जो इन आँखों से दिखाई नहीं पड़ता। शिवबाबा इनके द्वारा तुमको कौड़ी से हीरे जैसा बनाय रहा है। तुम्हारी मन–बुद्धि रूपी आत्मा कौड़ी मिसल बन पड़ी। कौड़ियों की ही याद आती रहती है, जिनमें अंधेरा–ही–अंधेरा आ जाएगा। तो क्या करना है? बाप को याद करो तो तुम हीरे मिसल बन जावेंगे, हीरो पार्टधारी बन जावेंगे। कहाँ हीरा और कहाँ कौड़ी! तो कौड़ी मिसल बुद्धि अब नहीं बनाना; लेकिन हीरे मिसल बुद्धि बनाना है। बाप को याद करना है। वो बाप हीरे जैसा बनाय रहा है। अच्छा! मीठे–2 सिकीलधे बच्चों प्रति मात–पिता, बापदादा का यादप्यार, गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते। ओमशांति।